666
सिर्फ एक पहेली नहीं

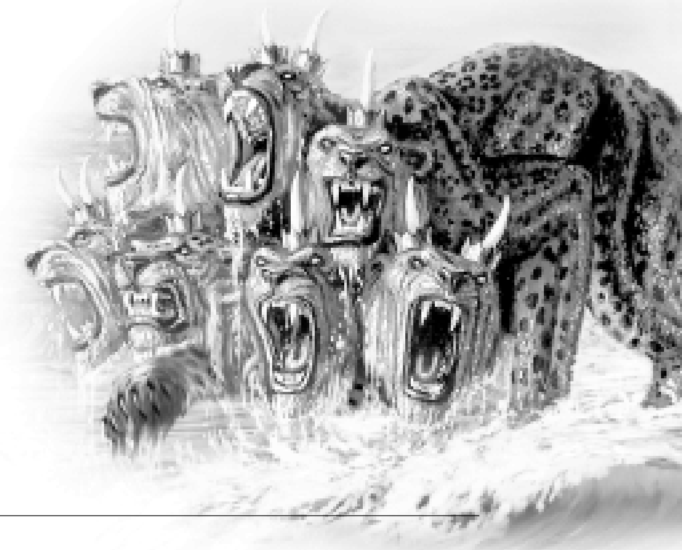

“उस को छोड़ जिस पर छाप अर्थात् उस पशु का नाम, या उसके नाम का अंक हो, और कोई लेन देन न कर सके। ज्ञान इसी में है, जिसे बुद्धि हो, वह इस पशु का अंक जोड़ ले, क्योंकि वह मनुष्य का अंक है, और उसका अंक छः सौ छियासठ है।” —प्रकाशितवाक्य 13:17, 18.

बाइबल में “पशु” की रहस्यमयी छाप या उसके नाम, अंक 666 के बारे में की गयी भविष्यवाणी ने लोगों में जितनी चिंता और दिलचस्पी जगायी है, उतनी शायद ही बाइबल के दूसरे विषयों ने जगायी हो। टी.वी. और इंटरनॆट पर, यहाँ तक कि फिल्मों, किताबों और पत्रिकाओं में भी पशु की इस छाप को लेकर बेहिसाब अटकलें लगायी गयी हैं।

कुछ लोगों का मानना है कि बाइबल के मुताबिक अंक 666 उन लोगों की निशानी है जो मसीह-विरोधी हैं। दूसरे कहते हैं कि जो पशु के गुलाम हैं, उनकी पहचान के लिए यह नंबर उनके शरीर पर या तो गोदा जाता है, या फिर एक माइक्रोचिप में, कोड भाषा में यह नंबर लिखकर उनके शरीर के अंदर डाला जाता है। और कुछ ऐसे भी हैं जो मानते हैं कि अंक 666 कैथोलिक चर्च के पोप की निशानी है। वे कहते हैं कि अगर पोप का सरकारी खिताब, विकेरियस फिलीई डी (परमेश्वर के पुत्र का पादरी) के बदले रोमन नंबर डाला जाए, और उसमें थोड़ी फेरबदल की जाए तो हिसाब करने पर उन्हें अंत में अंक 666 मिलेगा। इसके अलावा, यह भी दावा किया गया है कि रोमी सम्राट डायक्लीशन के लातीनी नाम का और इब्रानी भाषा में कैसर नीरो के नाम का हिसाब लगाने पर यही नंबर मिलेगा।*

लेकिन पशु की छाप के बारे में इस तरह के ख्याली-पुलाव या मन-गढ़ंत बातों में और बाइबल जो कहती है, उसमें बहुत फर्क है जैसा कि हम अगले लेख में देखेंगे। बाइबल इतना ज़रूर बताती है कि जब परमेश्वर इस मौजूदा संसार का नाश करेगा तब जिन लोगों पर यह छाप होगी, उन पर परमेश्वर का क्रोध भड़क उठेगा। (प्रकाशितवाक्य 14:9-11; 19:20) इसलिए अंक 666 का मतलब जानना सिर्फ एक मज़ेदार पहेली या गुत्थी सुलझाना नहीं, बल्कि इससे कहीं बढ़कर है। और हम शुक्रगुज़ार हैं कि यहोवा परमेश्वर जो प्रेम का साक्षात् रूप है और जो हमें आध्यात्मिक रोशनी देता है, उसने इस अहम विषय के बारे में अपने सेवकों को अँधेरे में नहीं रखा है।—2 तीमुथियुस 3:16; 1 यूहन्ना 1:5; 4:8.

* संख्या-विज्ञान के बारे में जानने के लिए सितंबर 8, 2002 की *सजग होइए!* (अँग्रेज़ी) देखिए।

पशु और उसकी छाप को पहचानना

क्या आपको कोई रहस्य या पहेली सुलझाने में मज़ा आता है? इसके लिए सबसे पहले आपको सुराग ढूँढ़ना होगा, तभी आप एक रहस्य को सुलझा पाएँगे। उसी तरह प्रकाशितवाक्य के 13वें अध्याय में बताए गए पशु के नाम या उसकी छाप, अंक 666 का मतलब जानने के लिए हमें सुरागों की ज़रूरत है जो हमें परमेश्वर के प्रेरित वचन से मिलते हैं।

इस लेख में हम चार पहलुओं पर गौर करेंगे, जो पशु की छाप का मतलब जानने में अहम सुराग हैं। ये पहलू हैं: (1) बाइबल में कुछ लोगों के नाम किस बिनाह पर रखे गए, (2) पशु की पहचान, (3) 666 को "मनुष्य का अंक" कहने का मतलब क्या है, और (4) छः नंबर का क्या अर्थ है और इसे तीन बार यानी 666 लिखने का क्या मतलब है।—प्रकाशितवाक्य 13:18.

बाइबल में दर्ज़ नामों का गहरा अर्थ

अकसर बाइबल में दिए लोगों के नामों का गहरा अर्थ होता है, खासकर जब ये नाम परमेश्वर की तरफ से दिए जाते हैं। मिसाल के लिए, परमेश्वर ने अब्राम का नाम बदलकर इब्राहीम रखा जिसका मतलब है, "बहुतों का पिता," क्योंकि वह आगे चलकर सारी जातियों का पिता होनेवाला था। (उत्पत्ति 17:5, फुटनोट) परमेश्वर ने यूसुफ और मरियम से कहा कि वे अपने होनेवाले बच्चे का नाम यीशु रखें जिसका मतलब है, "यहोवा ही उद्धार है।" (मत्ती 1:21; लूका 1:31) यहोवा ने यीशु को क्या ही सही नाम दिया, क्योंकि उसकी सेवा और कुरबानी के ज़रिए यहोवा ने हमारे लिए उद्धार का रास्ता खोल दिया।—यूहन्ना 3:16.

उसी तरह, परमेश्वर ने पशु में ज़रूर कुछ ऐसे लक्षण देखे होंगे जिसकी बिनाह पर उसने उसे अंक 666 का नाम दिया। मगर उन लक्षणों का पता लगाने से पहले हमें पशु को पहचानना होगा और उसके कामों के बारे में जानना होगा।

पशु के बारे में राज़ खुला

बाइबल में, दानिय्येल नाम की किताब हमें लाक्षणिक पशुओं या जंतुओं के बारे में काफी जानकारी देती है। इसके अध्याय 7 में 'चार बड़े बड़े जन्तुओं' की एक जीती-जागती तसवीर पेश की गयी है। ये हैं: सिंह, रीछ, चीता और एक खूँखार जंतु जिसके लोहे के बड़े-बड़े दाँत हैं। (दानिय्येल 7:2-7) दानिय्येल हमें बताता है कि ये पशु "राजा" (*NHT*) यानी दुनिया की सरकारों को दर्शाते हैं जो एक-के-बाद-एक आनेवाले विशाल साम्राज्य पर राज करते हैं।—दानिय्येल 7:17, 23.

प्रकाशितवाक्य 13:1, 2 में बताए पशु के बारे में, *बाइबल का अनुवाद करनेवाला शब्दकोश* (अँग्रेज़ी) कहता है कि इस पशु में "दानिय्येल के दर्शन में देखे गए चार जंतुओं के सारे लक्षण मौजूद हैं . . . इसलिए [प्रकाशितवाक्य का] यह पहला पशु, संसार की उन तमाम सरकारों को दर्शाता है जो मिलकर परमेश्वर का विरोध करती हैं।" प्रकाशितवाक्य 13:7 इस बात को पुख्ता करता है, जहाँ पशु के बारे में लिखा है: "उसे *हर एक* कुल, और लोग, और भाषा, और जाति पर अधिकार दिया गया।"*—तिरछे टाइप हमारे।

बाइबल, इंसानी सरकारों को दर्शाने के लिए पशुओं का इस्तेमाल क्यों करती है? इसकी कम-से-कम दो वजह हैं। पहली, इंसानी सरकारों ने सदियों से खूँखार जानवरों की

* इन आयतों की ब्यौरेवार जानकारी के लिए, *रेवलेशन—इट्‌स ग्रैंड क्लाइमैक्स एट हैंड!* किताब का अध्याय 28 देखिए। इसे यहोवा के साक्षियों ने प्रकाशित किया है।

तरह लोगों का खून बहाया है। इतिहासकार विल और ऐरियल ड्यूरंट लिखते हैं: "पूरे इतिहास में हमेशा से युद्ध होते रहे हैं, और सभ्यता और लोकतंत्र के कायम होने के बाद भी ये कम नहीं हुए हैं।" इसलिए कितना सच कहा गया है कि "एक मनुष्य दूसरे मनुष्य पर अधिकारी होकर . . . हानि लाता है।" (सभोपदेशक 8:9) दूसरी वजह यह है कि 'अजगर यानी शैतान ने अपनी सामर्थ, और अपना सिंहासन, और बड़ा अधिकार, पशु को दिया है।' (प्रकाशितवाक्य 12:9; 13:2) जी हाँ, इंसानी सरकारों की शुरूआत शैतान यानी इब्‌लीस ने की, इसलिए सभी सरकारों का रवैया उसी के जैसा खूँखार है।—यूहन्‍ना 8:44; इफिसियों 6:12.

लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हर शासक शैतान के हाथों की कठपुतली है। दरअसल, एक तरह से इंसानी सरकारें 'परमेश्वर की सेवक' हैं क्योंकि वे समाज में शांति और व्यवस्था कायम करती हैं, वरना चारों तरफ बेहिसाब गड़बड़ी होती। कुछ नेताओं ने तो इंसान के बुनियादी अधिकारों, यहाँ तक कि सच्ची उपासना करने के हक की भी रक्षा की है, जो शैतान को बिलकुल गवारा नहीं। (रोमियों 13:3, 4; एज्रा 7:11-27; प्रेरितों 13:7) इसके बावजूद न तो कोई इंसान, न ही उसका कोई संगठन कभी हमेशा के लिए शांति और सुरक्षा ला पाया है, क्योंकि यह दुनिया इब्‌लीस की मुट्ठी में है।*—यूहन्‍ना 12:31.

* सच्चे मसीही जानते हैं कि इंसानी सरकारें अकसर वहशियाना सलूक करती हैं, फिर भी वे बाइबल की हिदायत के मुताबिक सरकारों को 'प्रधान अधिकारी' मानकर उनके अधीन रहते हैं। (रोमियों 13:1) लेकिन जब ये अधिकारी उन्हें परमेश्वर के कानून के खिलाफ काम करने का हुक्म देते हैं, तो वे 'मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं।'—प्रेरितों 5:29.

"मनुष्य का अंक"

बाइबल में, अंक 666 को "मनुष्य का अंक" कहा गया है और यह पशु की छाप का मतलब समझने का तीसरा सुराग है। यहाँ किसी एक आदमी की बात नहीं हो रही है, क्योंकि पशु पर किसी इंसान का नहीं बल्कि शैतान का अधिकार है। (लूका 4:5, 6; 1 यूहन्‍ना 5:19; प्रकाशितवाक्य 13:2, 18) पशु की छाप को "मनुष्य का अंक" कहने का मतलब है कि इसमें आत्मिक प्राणी या दुष्ट स्वर्गदूत का स्वभाव नहीं बल्कि इंसानी फितरत मौजूद है और इसलिए यह पशु, इंसान के कुछ लक्षण ज़ाहिर करता है। ये लक्षण क्या हो सकते हैं? बाइबल जवाब देती है: "सब [इंसानों] ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियों 3:23) इसलिए पशु के पास 'मनुष्य के अंक' होने का मतलब है कि सरकारों की हालत भी इंसानों की जैसी गिरी हुई है, यानी उनमें भी पाप और असिद्धता पायी जाती है।

इतिहास इस बात का गवाह है। अमरीका के भूतपूर्व सरकारी सचिव, हेन्री किसिंजर ने कहा: "जितनी सभ्यताएँ वजूद में आयीं, वे आखिरकार टूटकर बिखर गयीं। हमारा इतिहास नाकाम कोशिशों और अधूरे सपनों की एक लंबी दास्तान है . . . इसलिए एक इतिहासकार को यह सच्चाई माननी होगी कि कोई भी इंसान हादसे को नहीं टाल सकता।" किसिंजर ने जिस ईमानदारी से अपनी राय ज़ाहिर की, उससे बाइबल की यह बुनियादी सच्चाई और भी पुख्ता होती है: "मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य चलता

666 का मतलब जानने के सुराग

1. बाइबल में दिए इंसानों के नामों से अकसर उनके गुणों या उनकी ज़िंदगी के बारे में पता चलता है। यही जानकारी हमें इब्राहीम, यीशु और ऐसे कई लोगों के नामों से मिलती है। उसी तरह पशु के नाम या संख्या से भी उसके लक्षणों के बारे में पता चलता है।

2. बाइबल की किताब, दानिय्येल में कई तरह के पशुओं का ज़िक्र मिलता है, जो एक-के-बाद-एक आनेवाले इंसानी राज्यों या साम्राज्यों को दर्शाते हैं। प्रकाशितवाक्य 13:1, 2 में ज़िक्र किया गया पशु दुनिया भर की राजनीतिक व्यवस्था को दर्शाता है, जिसे शैतान ताकत देता और अपनी मुट्ठी में रखता है।

3. पशु के पास "मनुष्य का अंक" होना इस बात की तरफ इशारा करता है कि पशु में दुष्ट स्वर्गदूत का स्वभाव नहीं बल्कि इंसानी फितरत मौजूद है। और जिस तरह इंसान, पाप और असिद्धता की वजह से नाकाम रहे हैं, वही नाकामी इसमें भी पायी गयी है।

4. बाइबल के मुताबिक, नंबर सात पूर्णता या सिद्धता को दर्शाता है। और छः नंबर, सात से कम है। तो इसका मतलब है कि परमेश्वर की नज़रों में छः असिद्धता को दिखाता है। और जब छः को तीन बार यानी 666 लिखा जाता, तो यह उस असिद्धता या कमी को ज़बरदस्त तरीके से उजागर करता है।

तो है, परन्तु उसके डग उसके अधीन नहीं हैं।”—यिर्मयाह 10:23.

यह समझ लेने के बाद कि पशु कौन है और परमेश्वर उसे किस नज़र से देखता है, अब हम पहेली की आखिरी गुत्थी सुलझाने के लिए तैयार हैं। वह है, छः नंबर का क्या अर्थ है और इसे तीन बार यानी 666 लिखने का क्या मतलब है।

छः को तीन बार दोहराया गया—क्यों?

बाइबल में कुछ नंबरों के लाक्षणिक अर्थ हैं। जैसे सात नंबर को अकसर परमेश्वर की नज़र में पूर्णता या सिद्धता को दिखाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। मिसाल के लिए, परमेश्वर के सृष्टि के हफ्ते में सात “दिन” थे यानी लंबी समय-अवधियाँ, जिनके दौरान उसने पृथ्वी पर सृष्टि करने का अपना मकसद *पूरा* किया। (उत्पत्ति 1:3–2:3) परमेश्वर का “वचन” चाँदी के समान है, जिसे “सात बार निर्मल” किया गया, यानी *सिद्ध रूप से* ताया गया। (भजन 12:6; नीतिवचन 30:5, 6) नामान जो एक कोढ़ी था, उसे यरदन नदी में सात बार डुबकी लगाने की हिदायत दी गयी जिसके बाद वह *पूरी तरह* चंगा हो गया।—2 राजा 5:10, 14.

छः, सात से एक नंबर कम है। तो क्या यह कहना सही नहीं होगा कि परमेश्वर की नज़र में छः का मतलब असिद्धता या खामी है? बेशक सही होगा! (1 इतिहास 20:6, 7) इसके अलावा, 6 को तीन बार यानी 666 लिखने से असिद्धता और भी ज़बरदस्त तरीके से उजागर होती है। ऐसा कहना सही है, क्योंकि इसका एक सबूत हमने पहले ही देखा है कि 666 को “मनुष्य का अंक” कहा गया है। इसलिए पशु के पिछले रिकॉर्ड, उसके “मनुष्य का अंक” होने और अंक 666 का एक ही नतीजा निकलता है कि यहोवा की नज़र में वह पशु बुरी तरह नाकाम है और उसमें बड़ी कमी पायी गयी है।

पशु की इस कमी से हमें प्राचीन बाबुल के राजा बेलशस्सर के बारे में कही बात याद आती है। दानिय्येल के ज़रिए यहोवा ने उस राजा से कहा था: “तू मानो तराजू में तौला गया और हलका पाया गया है।” उसी रात बेलशस्सर मार डाला गया और शक्तिशाली बाबुल का तख्ता पलट गया। (दानिय्येल 5:27, 30) राजनीति को दर्शानेवाले पशु और उसकी छाप लिए लोगों का परमेश्वर जब न्याय करेगा, तो उनका भी वही हश्र होगा जो बेलशस्सर का हुआ था। उस वक्त परमेश्वर न सिर्फ राजनीतिक व्यवस्था का बल्कि इंसान की हुकूमत का नामो-निशान मिटा देगा। (दानिय्येल 2:44; प्रकाशितवाक्य 19:19, 20) इसलिए यह कितना ज़रूरी है कि हम किसी भी हाल में पशु की छाप अपने पर न पड़ने दें, वरना हमें अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा!

इंसानी हुकूमत बुरी तरह नाकाम रही है, तभी तो उस पर अंक 666 बिलकुल ठीक बैठता है

छाप का मतलब

प्रकाशितवाक्य की किताब, अंक 666 बताने के ठीक बाद मेम्ने यीशु मसीह के 1,44,000 चेलों का ज़िक्र करती है। इन चेलों के माथे पर यीशु मसीह और उसके पिता, यहोवा का नाम लिखा हुआ है। ये नाम इस बात की निशानी हैं कि 1,44,000 जन यहोवा और उसके पुत्र की संपत्ति हैं, और वे बड़े गर्व के साथ उन दोनों की गवाही देते हैं। उसी तरह जिन लोगों पर पशु की छाप है, वे ज़ाहिर करते हैं कि